(9)

## आधा अधूरा

सीख गए हम प्रविधि जीविका,
निश्चित अपनी कर ली।
समझ लिया सौभाग्य सुखों से
झोली पूरी भर ली।
ज्ञानी निज को मान लिया,
अति ही प्रबुद्ध विज्ञानी।
किंतु कला जीने की हमको,
रही सदा अनजानी।। 1 ।।

किए बहुत साधन एकत्रित,
सोचा सुख पाऊँगा।
संसाधन अंबार लगाकर,
ऊँचा कहलाऊँगा।
सफल रहा संसार दृष्टि में,
धन भी बहुत कमाया।
फैला यश सम्मान मिल गया,
विपुल प्रभाव बढाया ।। २ ।।

जग से मिला बहुत कुछ लेकिन,
चिन्ता गई न मन की।
ज्यों ज्यों लाभ हुआ बढ़ती थी,
तृष्णा मेरी धन की।
देख अभाव ग्रस्त प्राणी को,
मान मुझे होता था।
अपने कौशल पर मित्रों,

अभिमान मुझे होता था।। 3 ।।

बढ़ा लिया मस्तिष्क शक्ति को,
हृदय हुआ पर बौना।
अपने सुख के लिए समझता,
नर को मात्र खिलौना।
भाव संपदा से न किसी ने,
परिचित था करवाया।
बार-बार उर को मानस से,
गया यहाँ हरवाया।। 4 ।।

तदपि शून्यता अनुभव करता,
इस पर आप हंसेंगे।
छद्म दार्शनिक कहकर मुझ पर,
तीखे व्यंग्य कसेंगे।
पहले मैं भी नहीं मानता था,
कुछ मैंने खोया।
सजग रहा मस्तिष्क हृदय पर,
मेरा अब तक सोया।। 5।।

विद्यावान बनाया निज को,
छोड़ा किंतु अधूरा।
बार-बार सबको दिखलाया,
सफल व्यक्ति मैं पूरा।
साधन अर्जन ही सिखलाया,
जीना कहां सिखाया।
उलझा दिया वस्तुओं में क्या,
सुख का मार्ग दिखाया।। 6 ।।

बुद्धि प्रशिक्षण में सब रत हैं,
देखे कौन हृदय को ।
कला प्रविधि कौशल सीखो सब,
भूलो ज्ञान उदय को।
प्रतिद्वन्द्वी तुम बनो न बनना,
व्यक्ति कभी सहयोगी।
बढ़ो गिराकर अन्य व्यक्ति को,
बनो सदा सुखभोगी।। 7 ।।

अब भी कोई मुझे बता दे,
सुख की सच परिभाषा।
अभी बची है जीवन जीने,
की मुझमें अभिलाषा।
छोड़ मान पाखण्ड मुझे,
स्वीकृत है आज पराजय।
गई उम्र सब व्यर्थ नहीं अब,
इसमें कोई संशय।। 8 ।।

देख किसी की भीगी आँखें,
दृग मेरे भर आएं।
देख किसी को गिरता दोनों,
हाथ स्वयं बढ़ जाएं।
मुंह न फेर कर चलूं देखकर,
अत्याचार किसी पर ।
न्यौछावर हो मेरा मन भी,
निश्छल मुक्त हंसी पर।। 9 ।।

देख सकूँ सौन्दर्य सुधाकर,
का छत बैठ भवन की।
कुछ क्षण तो हो शान्त दौड़ इस,
पीड़ाकारी मन की।
नहीं यंत्र मावन बनने की,
पीड़ा अब सहनी है।
व्यथा कथा असफलता अपने,
जीवन की कहनी है।। 10 ।।

देह रोग सब दूर भले हो,
पर मन की बीमारी।
कौन करेगा दूर आपदा,
हरता कौन हमारी।
दया करो सिखलाओ जीना,
हो सपना प्रभु पूरा।
नहीं बना रह सकता नर मैं,
आधा और अधूरा।। 11 ।।

- शिव कुमार मिश्र